Totalbhakti.com

आरती श्री रामावतार जी की

भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी ।

हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुतरुप बिचारी ।।

लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी ।

भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभा सिंधु खरारी ।। 1 ।।

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता ।

माया गुन ब्यानातति अमाना वेद पुरान भजंता ।।

करुना दुख सागर , सब गुन आगर , जेहि गावहिं श्रुति संता ।

सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्री कंता ।। 2 ।।

ब्रह्माण्ड़ निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।

मम उर सो बासी , यह उपहासी , सुनत धीर मति थिर नरएँ है ।।

उपजा जब ग्याना , प्रभु मुसुकाना , चरित बहुत विधि कीन्ह चहै ।

कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रमे लहैं ।। 3 ।।

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रुपा ।

कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ।।

सुनि वचन सुजाना , रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा ।

यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते नपरहिं भवकूपा ।। 4 ।।

www.totalbhakti.com